

Resolution of Science Decade Would help protecting the Marine Assets

The sea plays a very important role in human welfare, which is now in deep crisis. The seas and oceans are in grave threat from pollution, rising of global temperature due to climate change.

To deal with the sea crisis, working groups from various countries came together to discuss on various mitigation measures during the **Regional Planning Workshop which was held at National Institute of Ocean Technology (NIOT), Chennai on 9th January, 2020.** Topics of the group discussions were;

- A Clean Ocean: Sources of Pollution & Mitigation
- Protecting and Preserving the Ocean for a clean marine ecosystem.
- A Predictable Ocean: Ability to Understand its Current Conditions and Estimation of Future Consequences.
- A Safe Ocean.
- Sustainable Sea that can secure the Marine Food Supply Chain. A Sea Policy that has transparency in information exchanged and the Technological Know-How Shared.



समुद्री संपत्ति की रक्षा करने में सहायक बनेगा समुद्री विज्ञान दशक

चेन्नै। मानव की खुशहाली में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले समुद्र आज समुद्री प्रदूषण, भूमंडलीय तापक्रम में वृद्धि, समुद्र अम्लीकरण और जलवायु परिवर्तन जैसे कई मुद्दों के कारण गंभीर संकट में हैं। सतत विकास हेतु समुद्र विज्ञान दशक इस परिकल्पना के साथ सामने आया कि समुद्र की अवनति के चक्र में परिवर्तन एवं महासागर, समुद्र एवं तटों के सतत विकास हेतु बेहतर परिस्थिति का निर्माण करने की आवश्यकता है। दिसंबर 2017 में यूनाइटेड नेशन जनरल असेंबली के बहतरवें सत्र में आगामी दशक को सतत विकास हेतु संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2021-30 का दशक 'सतत विकास के लिए समुद्री विज्ञान का दशक' घोषित किया है।

उल्लेखनीय है कि यह दशक नवीन ज्ञान उत्पन्न करने के लिए समुद्र प्रक्रियाओं की गहरी अनुशासनात्मक समझ और समाधान उन्मुख अनुसंधान दोनों को संबोधित करेगा। यह ज्ञान समुद्र पर दबाव कम करने, समुद्र के पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा करके उन्हें पुनःस्थापित करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए समुद्री संपत्ति की रक्षा करने में सामाजिक कारकों का

- निर्धारित छह सामाजिक परिणाम -

- एक स्वच्छ महासागर जहां प्रदूषण के स्रोत को पहचाना जाए और उसका उपचार कर उसे हटाया जाए।
- एक स्वस्थ एवं तन्यक महासागर जहां समुद्री परितंत्र को प्रतिचित्रित कर उसकी रक्षा की जाए।
- एक पूर्वानुमेय महासागर जिसकी धारा एवं आगामी महासागर की परिस्थितियों को समझने क्षमता समाज में हो।
- एक निरापद महासागर जहां लोग महासागर से उत्पन्न होने वाले खतरों से सुरक्षित रह सकें।
- खाद्य आपूर्ति के प्रावधान को सुनिश्चित करने वाले संधारणीय महासागर।
- आंकड़े, सूचना और प्रौद्योगिकियों के लिए निर्बाद प्रवेश के साथ एक पारदर्शी महासागर।

समर्थन करेगा।

गौरतलब है कि 13 से 15 मई 2019 तक कोपेनहेगन में प्रथम वैश्विक योजना बैठक का आयोजन किया गया जिसमें इस दशक के संबंध में समान स्तर की सूचना के साथ सभी प्रमुख हितधारकों ने भाग लिया। हिंद महासागर और आरओपीएमई क्षेत्र में आने वाले देशों के विचारों के

समानुक्रमण एवं संबोधन हेतु 8 से 10 जनवरी, 2020 तक रासप्रोस में हिंद महासागर के उत्तरी मध्य देश के साथ साथ आरओपीआरआरएमई समुद्र हेतु क्षेत्रीय योजना कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इसका उद्देश्य समुद्री विज्ञान हेतु सतत विकास के लिए किसी क्षेत्र की विशिष्ट प्राथमिकता, आवश्यकता और उनके

योगदान के क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र दशक के लक्ष्यों को समझना है।

इमसे पहले 6 व 7 जनवरी, 2020 को रासप्रोस में हिंद महासागर में सदस्य राज्यों की सुरक्षा और सतत विकास हेतु तटीय भेद्यता की क्षेत्रीय रूपरेखा पर दो दिवसीय कार्यशाला भी आयोजित की जाएगी। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र के देशों की तटीय भेद्यता के लिए एक सामान्य ढांचे पर निर्णय लेना होगा जो प्राकृतिक संकट और जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित होने की दिशा में उन्मुख है। दोनों कार्यशालाएं पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के प्रतिपादन में आयोजित की जा रही हैं।

ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, कांगो, फ्रांस, कुवैत, मालदीव, रूस, द्यूनीशिया, तंजानिया, श्रीलंका, सऊदी अरब, ब्रिटेन, अमेरिका और भारत जैसे विभिन्न देशों के लगभग 100 प्रतिनिधि इस आयोजन में भाग लेंगे। भारत इस कार्यकारी योजना समूह (इपीजी) का सदस्य है जो सतत विकास के लिए महासागर विज्ञान पर संयुक्त राष्ट्र के निर्णय के कार्यान्वयन योजना के विकास में समर्थन करने वाले आईओसी के लिए एक सलाहकार है।

Ref: [@MoES NIOT https://twitter.com/MoesNiot/status/1215286212182700032/photo/1](https://twitter.com/MoesNiot/status/1215286212182700032/photo/1)

Dr. Mohammad Faiyaz Anwar
Project Scientist, Vigyan Prasar